रात्रि क्लास 12/9/68 ओमशान्ति शिवबाबा याद है?

कई कई मीठे बच्चों को बाप को याद करने में तकलीफ होती है। समझते हैं बाबा देखने में तो नहीं आता सारी आयु साकार को देखते रहे हैं। तो देखने का जैसे शौक हो गया है। अभी समझाया जाता है आत्मा पतित हो पड़ी है। वह पावन कैसे बने? अपने परमपिता परमात्मा को देखें कैसे? अपन को भी नहीं देख सकते बाप को भी नहीं देख सकते। और सभी इन चीज़ों को इन आँखों से देख सकते हैं। बाकी आत्मा और आत्मा के बाप को नहीं देख सकते। पूजा भी की है बड़े2 लिंग की। बाप तो है बिन्दी। अगर बड़ा हो तो प्रवेश कर न सके। आत्मा भी छोटी है। बाप को भी आकर पढ़ाना है। जैसे खुद ज्ञान का सागर है तो आत्मा भी ज्ञान धारण करती है। अपन को बच्चे भूलते हैं तो बाप को भी भूलते हैं। भुलाने वाली है माया। अभी बाप ने परिचय दे दिया है आत्मा बहुत छोटी है। सितारा वा बिन्दी मिसल है; परन्तु इन आँखों से देख नहीं सकते। आत्मा को जाना जाता है। यह समझना है जैसे आत्मा बिन्दी है बाप भी बिन्दी है। उनको याद करना है। पतित से पावन बनना है। बाप बहुत तकलीफ तो नहीं देते। हाथ जोड़ने भी नहीं देते हैं। हाथ जोड़ते हो शिवबाबा को। वह तो है बिन्दी। तो उनको रेसपान्ड करना पड़े तो इन द्वारा हाथ जोड़ना पड़े। वह कैसे समझे शिवबाबा इन द्वारा जोड़ते हैं। शिवबाबा तो है ऊँच ते ऊँच परमपिता। यूँ तो आत्मा आत्मा को नमस्ते करती है। नमस्ते आत्मा ने कहा मुख से आत्मा को कहा। यह आदत अभी बाप ही आकर डालते हैं। अपन को भाई2 समझो। फिर उनमें बड़ा कौन? बड़ा भाई वह जो ज्ञान योग में तीखा हो। बच्चे एक/दो को देखते हैं तो बाप कहते हैं भाई2 को देखो, भाई को नमस्ते करो। यह आरगन्स है। काम करती है आत्मा। तब बाप कहते हैं यह पक्का करो हम आत्मा हैं। हम आत्माओं का पिता अशरीरी है। यह तो पहले2 पक्का ..... है। बापदादा आये हैं। दादा में बाप ने प्रवेश किया है। कल्प में एक ही बार तुम बापदादा कहते हो। और कोई ऐसे कह न सके। बेहद का बाप आकर कहते हैं बच्चे अपन को आत्मा समझो मुझ बाप को याद करो। जानते हो बाप पतित पावन सर्व का सद्गति दाता है। ओ गॉड फादर कहते हैं ना। फादर है जरूर। क्राइस्ट को तो फादर कह न सके। गॉड को ही फादर कहा जाता है। ओ गॉड फादर लिबरेट करो। किससे? दुखों से; परन्तु यह नहीं जानते दुख कौन देते, कैसे देते हैं। बाप समझाते हैं मैं दुख नहीं देता हूँ। यह दुख अभी रावण के राज्य में तुमको मिलती है। कहते भी हैं यह तो राक्षस रावणराज्य है; परन्तु समझते नहीं हैं। कल्प की आयु को ही नहीं जानते। किसको भी पता नहीं है परमपिता परमात्मा आकर सुखधाम की स्थापना करते हैं। तो बाप समझाते हैं अपने देह सहित सभी सम्बन्धों को छोड़ अपन को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो। आत्मा अविनाशी है। मैं भी अविनाशी हूँ। छोटा बड़ा नहीं होता हूँ। मेरा जन्म दिव्य और अलौकिक है। यह थोड़े ही कुछ जानता था। यह बाप ही ज्ञान की समझानी देते हैं। और कोई सतसंगों आदि में यह चित्र तुम नहीं देखेंगे। इनमें है समझानी। त्रिमूर्ति का चित्र भी नया है। भल वह त्रिमूर्ति दिखाते हैं; परन्तु शिव दिखाते नहीं हैं। ब्रह्मा द्वारा स्थापना, विष्णु द्वारा पालना, शंकर द्वारा विनाश; परन्तु कौन कराते हैं? इन्हों को ऐसा किसने बनाया। यह जानते ही नहीं। बाप समझाते हैं यह है पतित भ्रष्टाचारी दुनिया। पाप करते रहते हैं। भगवान के लिए कहते हैं सर्वव्यापी है। कितनी ग्लानि कर दी है। ऐसे करते–करते पापात्मा बन पड़े हैं। बाप के लिए भी झूठ बोल देते हैं। बाप ने तो बताया है यह है अन्तिम जन्म। अगर दूसरा जन्म लेंगे तो कहाँ तक जीता रहेगा। फिर भी मर पड़ेंगे। बच्चे भी मर जाते हैं। ज्ञान तो पा न सकेंगे। तुम जानते हो अभी बाकी थोड़ा समय है। 5000 वर्ष पहले अपना राज्य था। कितनी सहज बात है। हमारा राज्य था जो फिर हम स्थापन कर रहे हैं। स्थापना में पहले2 चाहिए पवित्रता। बुलाते भी हैं आकर पतित से पावन बनाओ। पतित बनाते हैं रावण। 5 विकार है ना। आधा कल्प है रामराज्य, आधा कल्प है रावण राज्य। बाप ने स्वदर्शनचक्र का राज़ भी समझाया है। यह है पुरुषोत्तम संगमयुग। फिर सतयुग–त्रेता, द्वापर–कलियुग। विराटरूप है ना। चोटी

ब्राह्मण तो जरूर चाहिए। प्रजापिता ब्रह्मा गाया हुआ है तो ब्राह्मण जरूर चाहिए। वह है हद का कुखवंशावली, तुम हो मुखवंशावली। तुम वास्तव में देवताओं से भी उत्तम हो। तुमको बाप पढ़ाते हैं। यह तुम जानते हो बाप पढ़ाते भी हैं। सद्गति भी देते हैं। तुम हो ईश्वरीय परिवार। शूद्र परिवार का कोई नहीं। फिर तुम बनेंगे दैवी परिवार। अभी शिवबाबा के परिवार हो। प्रजापिता ब्रह्मा भी है। शिव के भी, तो ब्रह्मा के भी सन्तान हो। इन(ल0ना0) के सन्तान नहीं हो। बाप ने समझाया है यही दूसरे जन्म में विष्णु के दो रूप ल0ना0 बनते हैं। प्रवृत्ति मार्ग है ना। उनको कहा जाता है विष्णु वंशावली। वैष्णव। वह लोग समझते हैं खान–पान शुद्ध खाने वाला वैष्णव है। वास्तव में वैष्णव माना पावन। वैष्णव अक्षर विष्णु से निकला है। तुम वैष्णव बन रहे हो। यानी विकार में नहीं जाते हो। वेजीटेरीयन तो बहुत हैं। विकार में जाने वाले को वेजीटेरीयन नहीं कह सकते। बल्लभाचारी वेजीटेरीयन तो कुख से, विकार से पैदा करते हैं ना। तो समझाना चाहिए वैष्णव धर्म किससे निकला है? हिंसा विकार को कहा जाता है। अहिंसा देवी–देवता धर्म है परम धर्म – पवित्र धर्म।

बाबा ने नर्कवासी और स्वर्गवासी वाला पर्चे बनाया था; परन्तु वह है हिन्दी में। इंग्लिश बना ही नहीं है। विशाल बुद्धि बच्चों की न होने कारण देरी कर देते हैं। फिर बाबा कह देते हैं ड्रामा। खुश करने लिए कह देते। ड्रामा में देरी पड़ी होगी कल्प2 ऐसा ही होगा। वह राइट हुआ ना। आगे के लिए समझानी दी जाती है झट काम करो तो झट सर्विस होगी। तो फिकरात न रहेगी।

अभी बच्चे कहते हैं याद भूल जाते हैं। अरे टीचर पास पढ़ते हो तो टीचर याद नहीं पड़ेगा। जितने टीचर पढ़ाते हैं सभी याद रहते हैं। यह एक ही पढ़ाई है नर से ना0 बनने की वा उनके राजाई में चलने की। सत्य ना0 की कथा सुनते हैं ना। व्रत भी रखते हैं। उस दिन छी–छी खान–पान नहीं खाते हैं। तुमको सच2 बाप सत्य नर से ना0 बनने की नालेज दे रहे हैं। बाप पढ़ाते हैं तो बरोबर स्वर्ग की स्थापना हो ..... वह सत्य ना0 की कथा सुनाते हैं तो स्वर्ग की स्थापना थोड़े ही होती है। वह भक्ति मार्ग में शास्त्र आदि बनते हैं। जो फिर कथा के रूप में सुनाते रहते हैं। सतयुग में यह कुछ भी होता नहीं। बाप कहते हैं यह ज्ञान प्रायःलोप हो जाता है। सतयुग में यह रहता नहीं। वह है ज्ञान का फल। फिर आधा कल्प बाद भक्ति शुरू होती है। गाया जाता है भक्ति से दुर्गति, रात। ज्ञान से सदगति, दिन। भक्ति मार्ग में बहुत धक्के खाते रहते। ज्ञान में कहाँ भी जाने की दरकार नहीं। अपन को सिर्फ आत्मा समझ बाप को याद करना है। वह है आत्माओं का बेहद का बाप। बेहद का वरसा बेहद का बाप ही देंगे। वह है 21 पीढ़ी। बाप स्वर्ग का वरसा देते हैं। रावण से फिर दुख मिलता है। बाप ने तो सुख का वरसा दिया, दुख का वरसा मिला रावण से। यह एक खेल है। वरसा और श्राप। यह चक्र फिरता रहता है। तुम सुख में हो आधा कल्प। सूर्यवंशी चन्द्रवंशी ही होते हैं। इसलिए स्वर्ग ही सबको याद रहता है। कोई मरता है तो कहते हैं स्वर्ग वासी हुआ। जैसे कि मूर्ख। कुछ भी पता नहीं स्वर्ग है कहाँ ऐसे ही कह देते हैं। उनसे भी पूछना चाहिए इसका मतलब बाकी सभी नर्क में हैं। वह स्वर्ग में गया। इनको कहा जाता है बेअकल। मनुष्य होकर स्वर्ग नर्क को भी नहीं जानते। मनुष्य जैसे जानवर मिसल बन गये हैं। एक्टर्स होकर ड्रामा को जानते ही नहीं। न बाप को, न रचना के आदि–मध्य–अन्त को जानते हैं। बाप ही आकर समझाते हैं। पूरा 5000 वर्ष का खेल है। सेकण्ड भी कम जास्ती नहीं हो सकता। जरा भी फर्क नहीं हो सकता। बाप कहते हैं यह युद्ध का मैदान है। तुम बाप को याद करते हो माया भुलाती है। इसमें ही लड़ाई है। यह है अहिंसक। योगबल से तुम विश्व की बादशाही लेते हो। आधा कल्प लिये। बहुत आमदनी है। जो नहीं सीखते हैं तो बाप से इतना वरसा पा नहीं सकते हैं। भारतवासियों की बात है। विलायत वालों को भी कहना चाहिए बाप है लिबरेटर। उनको बुलाते हैं शैतान से लिबरेट करो। हमको घर ले चलो। दूसरा कोई उनसे छुड़ा नहीं सकते। बाप ही पतित पावन है। नहीं तो सजाएँ। सजा से फिर पद भ्रष्ट हो जावेगा। बाप कहते हैं भल कितना भी धन कमाओ विनाश होना ही है। अभी अपना पद बनाना है। बाप इसके लिए पढ़ाते हैं। अच्छा गुडनाइट।